H/MUL/03051/2012
ISSN-2319 9318

Vidyawarta UGC Approved Refereed Journal Jr.No.62759

International Multilingual Research Journal

Vidyawarta®

Issue-21, Vol-15, Jan. to March 2018

RESEARCH

TEAMWORK

36

6th ANNIVERSARY CELEBRATIONS 2018

Editor
Dr.Bapu G.Gholap

35

जम्मू कश्मीर का विवादः एक त्रासदी

डॉ० निधि रायजादा
एसोसिऐट प्रोफेसर (इतिहास विभाग)
के०एम०जी०जी० (पी०जी०) कॉलिज,
बादलपुर (गौतमबुद्धनगर)

अनुतोष कुमार
शोधार्थी (इतिहास विभाग)
के०एम०जी०जी० (पी०जी०) कॉलिज,
बादलपुर (गौतमबुद्धनगर)

भारतीय उपमहाद्वीप का इतिहास दो देशों भारत और पाकिस्तान के मध्य मित्रता एवं शत्रुता, विश्वास एवं अविश्वास और सहयोग एवं संघर्ष का इतिहास रहा है। इसे विडम्बना ही कहा जायेगा कि एक ही सभ्यता से उत्पन्न होने के बावजूद भूमण्डलीकरण के दौर में भी दोनों देश एक दूसरे के षत्रु बने हुए हैं। जबकि दोनो राष्ट्रों के मध्य इतिहास, भूगोल एवं संस्कृति की डोर इतनी मजबूत है कि इसे नजरअंदाज करके दोनों राष्ट्र कभी भी अपना सर्वोच्च व समग्र विकास नहीं कर पायेंगे। नव सहस्त्राब्दी के प्रारम्भिक दशक में देखा जाए तो भारत पाकिस्तान संघर्ष वैश्विक राजनीति में एक गंभीर समस्या के रुप में उभरते हैं।[१] १९९० के दशक के बाद जहाँ एक ओर शीतयुद्ध की समाप्ति के पश्चात् अनेक ऐतहासिक संघर्षो का पटाक्षेप हुआ, वहीं पर भारतीय उपमहाद्वीप में कश्मीर को लेकर हुआ संघर्ष दोनों देशों के मध्य कश्मीर समस्या का सबसे विकराल रूप था। १९९९ में हुआ कारगिल संघर्ष इसी की अगली कड़ी माना गया, जिसमें अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर पाकिस्तान द्वारा प्रायोजित इस युद्ध की घोर निंदा की गई।[२] यहीं से भारत–पाकिस्तान द्वारा प्रायोजित एक अविश्वास का दौर भी प्रारम्भ होता है। वर्तमान में दोनों देश सामान्य सम्बन्धों की बहाली की दिशा में द्विपक्षीय वार्ताओं का दौर चलाकर, ट्रैक टू डिप्लोमैसी आदि के माध्यम से प्रयासरत हैं।

भारत–पाक सम्बन्धों की पृष्ठभूमि का यदि ऐतिहासिक अवलोकन किया जाए तो यह बात स्पष्ट होती है कि भारत की स्वतंत्रता और विभाजन के साथ ही बहुत बड़े पैमाने पर साम्प्रदायिक रक्तपात हुआ। विभाजन के बाद भी विवाद के कई गंभीर मुद्दे बचे रहे। जिस तरह पाकिस्तानी रजाकारों ने कश्मीर पर जबरन कब्जे की कोशिश की उसकी परिणति, युद्ध में ही होनी थी। इस प्रकार आरंभ से ही पाकिस्तान के साथ संबंधों का निर्वाह एक पेचीदा गुत्थी बन गयी, जिसके साम्प्रदायिक, सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक पक्ष आपस में बुरी तरह गुथे हुए हैं।[३] पाकिस्तान के सामने बड़ी समस्या यह रही है कि यदि वह स्वतंत्र राष्ट्र के रुप में अपनी अस्मिता प्रदर्शित करना चाहता है, तो धार्मिक वकट्टरपंथी रूप और भारत विरोध ही उसके लिए सबसे आसान रास्ता है। दोनों देषों के विभाजन का कोई तर्क संगत आधार नहीं। विडम्बना तो यह थी कि १९४७ से १९७१ तक स्वयं पाकिस्तान के दो हिस्से भाषा और संस्कृति की गहरी खाई के कारण अलग थे, इनके बीच की भौगोलिक दूरी, राष्ट्रीय एकता के प्रश्न को और भी दुरूह बनाती रही। इसी तरह भारत के सामने भी यह समस्या रही है कि धर्म निरपेक्ष राज्य की घोषणा करने भर से उसका संकट निवारण नहीं हो जाता।[४]

यहां छिटपुट साम्प्रदायिक दंगे होते रहते हैं। इसका यह अर्थ नहीं कि भारतीय मुसलमानों का राष्ट्र प्रेम खरा नहीं। इसका एक मात्र उद्देश्य यही संकेत करना है कि पाकिस्तान भारत में अल्पसंख्यकों को लेकर भारत और पाकिस्तान के बीच विभिन्न विवाद पैदा करता है और इन्हें आवश्यक तूल देता है। परन्तु दोनों देशों के मध्य सम्बन्धों में तनाव के